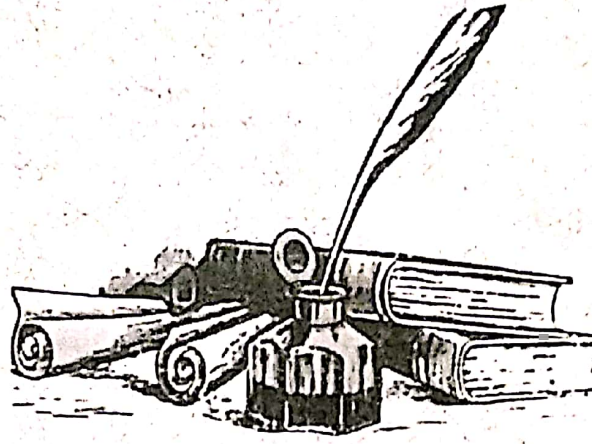


January - 2022

भारती (BHĀRATĪ)



DR. SANTU SINGHA
DR. PRIYANKA MANDAL
MR. SUBRATA GAYEN

Sanskrit Pustak Bhandar

6

Scanned with CamScanner

Dr
20/4/24



Scanned with OKEN Scanner

Published by
Debasish Bhattacharya
Sanskrit Pustak Bhandar
38, Bidhan Sarani, Kolkata-700 006

ISBN 978-93-92622-76-2

1st Published
January 2022

Printed By
Avhinaba Mudrani
Kolkata

Price : 600/-

Scanned with CamScanner



Scanned with OKEN Scanner

- | | |
|---|-----|
| 13. ऐतरेयब्राह्मणे राजसम्बन्धियज्ञानां स्वरूपविमर्शः
गोपाल-पाणिग्राही | 112 |
| 14. उद्दटनये काव्यलिङ्गविमर्शः
सुजित-दे | 123 |
| 15. गदाधरदिशा व्याप्तेः सिंहलक्षणविमर्शः
पालोपाहा रिया | 136 |
| 16. व्याकरणशास्त्रस्य दर्शनशास्त्रत्वम्
अभिजित् घोषः | 152 |
| 17. अर्वाचीनसंस्कृतकाव्येषु नारीवादप्रसङ्गः
भास्कर-च्याटाज्जी | 165 |
| 18. व्याप्तिप्रथमपूर्वलक्षणे समासप्रत्ययार्थघटितसिद्धान्तानां समालोचनम्
अभी-पालः | 175 |
| 19. जगन्नाथनये काव्यस्वरूपम्
शुभेन्दु-घोषः | 187 |
| 20. अलङ्कारशास्त्रदिशा भक्तिरसप्रतिष्ठा
शिवनाथ-सरदारः | 197 |
| 21. सागरनन्दिनये अर्थोपक्षेपकस्वरूपविचारः
सुरेश-घोषः | 204 |
| 22. काव्यप्रकाशे मीमांसादर्शनस्य प्रभावः
पापाङ्ग-पात्रः | 218 |
| 23. Grammar as a religious text: knowledge and performance
Dr. Manji Bhadra | 222 |
| 24. Benefits of Yoga to our physical and mental health
Dr. Supriya Pal | 231 |
| 25. Atheism in Samkhya Philosophy
Dr. Debbani Ghosh | 241 |
| 26. Perception of Nyaya-Vaishesika and other allied system
Dr. Sanjay Samaddar | 259 |

ISBN : 978-93-92622-76-2

IMG-20240601-WA0002.jpg

BHARATI

गदाधरदिशा व्याप्तेः सिंहलक्षणविमर्शः

पालोपाहा रिया

शोधच्छात्रा, संस्कृतविभागस्य, बाँकुडाविश्वविद्यालयस्य

शोधसारः - अस्मिन् शोधबन्धे व्याप्तेः पूर्वलक्षणेषु सिंहलक्षणं प्रतिपादितम्। तत्रापि पण्डितशिरोमणेः रघुनाथशिरोमणेर्मतमत्र व्याख्यातं गदाधरदिशा लक्षणस्यमसामानाधिकरण्यपदमाश्रित्य गदाधरदिशात्र विचार उपस्थापितः। किञ्च, आचार्यरघुनाथशिरोमणिरकमर्थं परित्यज्य द्वितीयार्थमनुसरतीत्यत्र किं बीजमित्यपि गदाधरदिशा निरूपितम्।

कुञ्चीशब्दाः- सामानाधिकरण्यम्, असामानाधिकरण्यम्, साध्यतावच्छेदकसम्बन्धः, हेतुतावच्छेदकसम्बन्धः, व्यापकम्, वृत्तित्वम्, साध्यम्, भूमिका -

चतुर्विधेषु प्रमाणेषु अनुमानप्रमाणमन्यम्। अनुमितिकरणं हि अनुमानम्। तत्र करणलक्षणस्य द्वैविध्यात् करणपरितमनुमानमपि द्विविधं प्राप्यते। परामर्शः अनुमानमिति केचन, व्याप्तिज्ञानमनुमानमित्यपरो यद्वा भवतु, उभयथा हि व्याप्तेरावश्यकतानुमितौ इति नव्यन्यायमार्तच्छेदः गङ्गेशोपाध्यायैः बहुधा व्याप्तिव्याख्याता। तत्रादौ पूर्वपक्षिणां मतमाश्रित्य व्याप्तेर्लक्षणानि निरूपितानि। तत्र च पञ्चलक्षणानि साध्याभाववदवृत्तित्वादीनि निरूप्य सिंहलक्षणं प्रतिपादितम्। तदुपजीव्य शिरोमणिभिर्व्याख्यातम्। पुनस्तदाश्रित्य जगदीशगदाधराभ्यां टीकाटीकिता। तयोर्गदाधरैः सर्वं सूक्ष्मेक्षिकया विचार्य स्वकीयमपि विचारवैभवं प्रादर्शाति जगदीशतो तद्विशेष इत्यत्र गदाधरपक्षमाश्रित्य मयापि स्वबुद्धिवैशद्याय गदाधरदिशा सिंहलक्षणं व्याख्यातम्।

* Bharti

<https://mail.google.com/mail/u/0/?tab=rm&ogbl#inbox/FMfcgzQVwnbvkqHpdsTKVDwbFKNDFJfh?projector=1&messagePartId=0.1>



Scanned with OKEN Scanner